IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

ज्योतिराव फूले तथा सावित्री बाई फूले की सामाजिक चेतना का राजनीतिक निहितार्थ

RAKESH KUMAR RAM

S/o MAKHAN RAM

RESEARCH SCHOLAR,

PG DEPTT. OF POLITICAL SCIENCE

LNMU, DARBHANGA, BIHAR

सारांश :-ज्योतिराव एवं सावित्री बाई फूले की सामाजिक चेतना का विचारवाद-आर्थिक, सामजिक एवं राजनीतिक मूल्यों एवं लक्ष्यों से सम्बंधित उन विचारो का संकलन है, जो उन मूल्यों और लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कार्यों की योजना तैयार करता है | उनकी सामाजिक चेतना एक राजनीतिक विचारधारा है, जो अपने व्यापक अर्थो में राजनीतिक व्यवस्था में आदर्श स्थान प्राप्त करना चाहती है | अपनी सामाजिक चेतना से समाज में अंधविश्वास, असमानता, अशिक्षा, रूढिवाद एवं दरिद्रता से मुक्ति दिलाकर शासक वर्ग पैदा करना चाहते थे | इन्हीं का व्यापक रूप डॉ० अंबेडकर है|

प्रस्तावना :- ज्योतिराव एवं सावित्री बाई फूले की सामाजिक चेतना से भारत की जनता भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं ऐतिहासिक पहलुओं को जान एवं समझ सकेंगे, जिससे परिमार्जन एवं परिवर्धन हो सके| महात्मा फूले की सामाजिक सुधार एवं पुनःजागरण से वर्तमान समाज में आये परिशोधन एवं राजनीतिक सहभागिता देश की राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता के साथ सामाजिक, राजनीतिक एवं

आर्थिक समानता किस प्रकार सुप्रभावित हुई है, इसका निरीक्षण, परीक्षण एवं शिक्षण हो सके □

परिचय :- महात्मा ज्योतिराव फूले का जन्म महाराष्ट्र में माली जाति के परिवार में 20 फरवरी 1827 को हुआ था | पिता गोबिंद राव और माता चिन्नबा थी | उनकी मृत्यु 28 नवम्बर,1890 को हुई थी । ये बाबा साहेब भीम राव अंबेडकर के गुरु माने जाते है □ सावीत्री बाई का जन्म 3 जनवरी 1831 ई ० को बॉम्बे प्रेसिडेंसी के नया गाँव में हुआ था | पिता खण्डोजी नवसे पाटील तथा माता लक्ष्मी बाई थी | विवाह के समय ज्योतिराव फुले की उम्र 13 वर्ष और सावित्रीबाई की उम्र 9 वर्ष थी | इनकी वैवाहिक जिंदगी सन 1840 ई० से 1890 ई° तक रही | इनके पुत्र यशवत फूले थे | इनकी मृत्यु 10 मार्च 1897 ई ० को पुणे में हुइ| भारत के प्रथम शिक्षिका के रूप में प्रचलित है | इनके जन्म दिन को शिक्षक दिवस के रूप में मनाये जाने की माँग की जाता है| इन्हें आधुनिक मराठी काव्य का आग्रदूत माना जाता है |

ज्योतिराव फूले तथ सत्यशोधक समाज - पश्चिम भारत में ज्योतिराव गोविंद राव फूले द्वारा निम्न जातियों की स्थिति में सुधार हेतु एक पृथक आंदोलन चलाया गया | निम्न जातियों के प्रति ब्रह्मण जातियों के तिरस्कार पूर्ण व्यवहारों के विरुद्ध ये आजीवन संघर्ष करते रहे | वे समाज के कमजोर वर्गो में शिक्षा के प्रसार के लिए अनेक स्कूल एवं अनाथालयों की स्थापना की | इन्होनें पुरे भारत की निम्न जातियों में चेतना जगाने हेतु " गुलामगिरी " नामक पुस्तक लिखी | इस दिशा में इनकी अन्य महत्वपूर्ण पुस्तके 'धर्म तृतीये रत्न' (पुराणो का भंडाफोर), 'ईशारा' और 'शिवाजी' की जवानी इत्यादि थीं |

महात्मा फुले पर प्रभाव :- ज्योतिराव फूले के जीवन में अनेक ब्रह्मण मित्र आए , जिसमें सदाशिव बल्लाल गोवंदे मोरोपंत विट्ठल वाल्वंकर सखाराम यशवंत तथा परांजपे आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं | ये सभी अंतरंग मित्र थे और लम्बे समय तक उनकी मित्रता बनी रही□ सभी मित्रों ने सभी धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन किया और ये इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि प्रत्येक धर्म में कुछ न कुछ प्रेरक तत्व हैं | जिनका मनुष्य पालन कर सच्चा इंशान बनता है | ज्योतिराव फूले एवं सदाशिव बल्लाल एवं गोवंडे छात्र जीवन से ही कुरीतियेा, पाखण्डो एवं अंधविश्वासों के विरोधी थे | वे मनुष्यों

को इनसे बचाव हेतु सत्प्रेरित करते थे | समाज, धर्म तथा देश की व्यवस्था के विषय में दोनों ही हमेशा विचार-विमर्श किया करते थे | उनकी दृष्टि समाज हितैषी थी | ज्योतिराव फूले पर सर्वाधिक प्रभाव सगुनावाई का पड़ा तथा मानव धर्म का महत्व ग्रहण किया | उनके अंतःमन में सद्-धर्म कूट -कूट कर भर दिया | दीन दुखियों की सेवा ही सच्ची ईश्वर की सेवा है, यह विचार भी उन्हीं सगुननबाई से मिला था | एक सामान्य नारी होते हुए भी उन्होंने फूले दांपत्य को ज्ञान प्रदान कर उनके व्यक्तित्व को ठोस, सुदृढ़ एवं उत्कृष्ट बना दिया | फूले दांपति कांति-यात्रा के पीछे सगुणाबाई की सकारात्मक प्रेरणा थी | इस प्रकार माता तुल्य सगुणाबाई के आलवे ईसाई मिशनरियों के व्यक्तित्व एवं उनके कार्यो के साथ-साथ विदेशी एवं देशी विद्वानों के विचारो से वे अत्यधिक प्रभावित हुए | भारतीय समाज में 19वीं शताब्दी में जाति-पाति, छूआछूत, सांप्रदायिकता, अंधविश्वास, ब्राह्मणवाद, लिंगवाद तथा अशिक्षा जैसी कुप्रथा प्रचलित थी, साथ ही बालविवाह , विधवा-विवाह निरोध, दासता एवं दरिद्रता ने फुले साहब को महात्मा बुद्ध की भाँति दुखों के कारण और निवारण हेतु जागृत किया |

महात्मा फुले का प्रभाव :- राष्ट्रीय आंदोलन को महात्मा फूले की नीतियों से बल मिला , समाज में जागरूकता आयी , लोग अधिकारो एवं कर्तव्यो के प्रति सचेत हुआ | कोल्हापुर के छत्रपति शाहु जी एवं बड़ौदा के सायाजी गायकवाड़ ने अंबेडकर को आर्थिक सहायता देकर विदेश पढ़ने हेतु भेजा, यह फूले के विचारों का ही प्रभाव माना जाएगा | विश्व के सबसे बड़े प्रजातंत्र भारत को सही अर्थो में समानता , बंधुता एवं व्यक्ति की गरिमा के साथ नियमितता एवं रचनात्मकता महात्मा फूले से ही मिली है | उन्होंने जो आंदोलन चलाया , वह मानवता-रक्षक था | उनसे सर्वसमाज लाभांवित हुआ | आधुनिक भारत के निर्माताओं में महात्मा फूले एवं सावित्री बाई फूले का नाम अग्रगण्य है उन्होंने 19 वीं शताब्दी के पुनर्जागरण में शोषण मुक्त स्वस्थ समाज की स्थापना हेतु अपना जीवन समर्पित कर दिया | उन्होंने विविध प्रकार की शिक्षा व्यवस्था को अपने स्तर , समाज तथा सरकारी सहयोग से सफल संचालन किया | जैसे प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च, स्त्री, पौढ़ एवं विधवा शिक्षा | शिक्षा विषयक विचारों को कार्यान्वित करने के सफल प्रयास किए तथा अंधकारमय समाज को स्वज्योति से आलोकित करने का प्रयास किया | हर रविवार को शूद्रों की बदहाली पर चर्चा करने के लिए एकत्रित होने वाले जोतिबा फूले, मित्रों और उनके सह-व्यवसायियों ने निर्णय लिया कि वे एक

संस्था का गठन करेंगे | तदनुसार, 24 सितम्बर, 1873 ई० को उन्होंने सत्यशोधक समाज की स्थापना की और प्रथम कोषाध्यक्ष बने | समाज का मुख्य उद्देश्य शूद्रों और अतिशुद्रो को ब्राह्मणों के शोषण से मुक्ति दिलाना था| सत्यशोधक समाज के सभी सदस्यो ने यह शपथ लिया कि वे बिना किसी मध्यस्थ के केवल एक विश्वनिर्माता (निर्भिक) की आराधना करेंगे और सभी मनुष्यों को ईश्वर की एक समान संताने मानेंगे | 'सत्यदीपिका' के अक्टूबर 1873 ई० के अंक में लिखा गया कि पुणे में इन दिनों एक महान क्रांति हो रही है | कुनबी, माली, कुंवर, बढ़ाई, और अन्य शुद्र जातियों के 700 परिवारो ने सूत्रबद्ध होकर यह निर्णय लिया है कि वे आध्यात्मिक और सामाजिक मसलो पर ब्रह्मणों की गुलामी से मुक्ति पाएंगे |

ब्रिटेन की महारानी और फूले का पत्राचार :- ज्योतिराव नें ब्रिटेन की महारानी के दरबार में अछूतों की मुक्ति का अनुरोध करते हुए लिखा --- "आपने अपने शासन में दसता को प्रतिबंधित (अवैध घोषित) कर समूची दुनिया को एक अद्भूत सन्देश दिया है | आपकी प्रतिष्ठा को भारी आंच आएगी , यदि आप मेरे इन दुर्भाग्यपूर्ण बांधवो को मुक्त नहीं करेंगी --- आपकी प्रतिष्ठा की भव्यता के बारे में सुनकर मैं समय पर उचित कार्रवाई करने के लिए आपके पास दौड़ा आया हूँ | हमारे देश में ब्रह्मणो ने आतिशुद्रों, भांग और महारो को काफी शोषण किया हैं | आप हमारे देश में आकर उनकी दुर्दशा को कब देंखेंगी ? भांग और महरों का अत्यन्त शोषण किया जाता हैं और वे अपनी पूर्व की भव्य स्थिति को भूल चुके हैं, वे बहुत सरल हैं और अपने शत्रु आर्य ब्राह्मण की साजिशों और रणनीतियों को नहीं समझ सकते हैं | ब्राह्मणों नें अतिशूद्रों को समाज में सबसे निम्न स्तर देकर उनसे बदला लिया हैं, क्योंकि अतिशूद्रों को ही वे अछूत कहते हैं | उनके स्पर्श मात्र से वे स्वयं को अपवित्र हो गया, समझते हुए ब्रह्मण अपने घर लौटकर स्नान करते हैं | फिर वे अतिशूद्रों को पढाने, लिखाने व सिखाने का सपना भी कैसे देख सकते हैं ?"

ज्योतिराव ने प्रशासनिक सेवाओं में ब्राह्मणवादी भाई-भतीजावाद, भ्रष्ठाचार व वर्चस्व को खत्म करने के लिए ब्रिटिश प्रशासन से जनसेवाओं में आरक्षण देने को जोरदार अपील कर अनुरोध किया | सरकारी अधिकारी एवं कर्मचारी का चयन सभी समुदाय से जनसँख्या में उनके अनुपात के अनुसार करने का अनुरोध किया | ऐसा करने से समाज के निम्नतम स्तर का भारतीय लाभान्वित हो सकेंगे |

फूले का व्यक्तित्व एवं कृतित्व :- ज्योतिबा फूले ने वैदिक ईश्वरो व देवताओ पर प्रहार किया जो वैदिक दासता के संस्थापक थे | उन्होने यह विल्कुल स्पष्ट किया कि 'देवता' विदेशी आक्रमांकारी थे, जिन्होंने क्षत्रियों एवं राक्षसों का विनाश करके भारत की सैन्य शक्ति को नष्ट कर दिया और सामाजिक सौहार्द को बिगाड़ दिया | अपनी लोकप्रिय पुस्तक 'गुलमगिरी' में उन्होंने लिखा "हमें दी गई अनेक परंपराये, रीतियों तथा ब्राह्मणों की पवित्र पुस्तकों में वर्णित पौराणिक चरित्रों से यह स्पष्ट होता हैं कि यह दो नस्लों के बीच भीषण संघर्ष हुआ था | ब्रह्मणो की पवित्र पुस्तको में देवी व दैत्यों के अनेकों युद्धों का वर्णन हैं | वह निश्चित ही आरंभिक संघर्ष था | यहाँ के जिन मूल निवासियों ने ब्राह्मणों के देवताओ से संघर्ष किया वे राक्षस नहीं वरण इस भूमि के रक्षक थे | उन्होंने कथाओं में इसे बिलकुल दूसरे ढंग से प्रस्तुत किया जबकि ये मूल निवासी श्रेष्ठ तथा मजबूत थे। ब्रह्मा, परसुराम व दूसरे के नेतृत्व में ब्राह्मणों ने मूल निवासियों के विरूद्ध भयंकर युद्ध छेड़ा | अंततः वे अपनी श्रेष्ठता स्थापित करने में कामयाब रहे और उन्होंने इन पर नियंत्रण कर लिया | अनेक कथाओं में संघर्षों के विवरण हैं पर, ब्रह्मणो की पुस्तकों में ही हैं | कुछ मामलो में उन्हें भागने को विवश किया गया और अंत में उन्हें पूर्णतः दास बना लिया गया | परशुराम ने इस भूमि के निवासी क्षत्रियो पर जो अत्याचार व अमानवीयता की , यदि जो कुछ कहा गया हैं, हम उसके दसवें हिस्से का भी विश्वास करें तो यह पता चलता हैं कि वे कोई ईश्वर नहीं थे | शायद ही पूरे इतिहास में कोई इतने अलोकप्रिय, क्रूर व अमानवीय था | वह नीटो, आलेरिंक या मैकियावेली की करतूतें भी परशुराम के सामने फीकी पर जाती है | उन्होंने नादान बच्चों का वध केवल इसलिए कर दिया कि इस भूमि पर उनके मत के लोग सुरक्षित आधार स्थापित कर सके | इस कारण उनकी पूजा नहीं वरन उनकी आलोचना करने की जरूरत है | फूले ने जन जागृति की तथा ब्राह्मणवाद से धृणा की, ब्राह्मणों या सवर्णों से नहीं, उन्हे ईंसानियत प्रिये थी | समानता, बंधुत्वता, निडरता, समर्पण, सेवाभाव और सहानुभूति

आदि गुण पसंदीदा थे | कर्मठता, निष्कपता, दयालुता तथा मानवता के अन्यान्य गुण से परिपूर्ण थे | वे समाज के सजग प्रहरी एवं संक्षक थे | वे सामाजिक समरसता, स्वतन्त्रता, अधिकार, न्याय और विकास के पोषक एवं उत्प्रेरक थे | वे आशिक्षा, अंधविश्वास, पाखण्ड, दासता शोषणकारी व्यवस्था, दहेज, लिंगवाद जैसे सामाजिक बुराईयों का मुखर विरोधी तथा सुधारक थे |

राजनीतिक निहितार्थ

महात्मा फूले का मानना था कि किसी भी व्यक्ति को सामाजिक समानता, राजनीतिक भागीदारी, धार्मिक एवं आर्थिक स्वतंत्रता और शिक्षा प्राप्ति के अधिकार से वंचित करना तथा उनका शारीरिक एवं मानसिक रूप से धर्म के आधार पर शोषण करना या शोषण को धर्म मानना क्रूरता तथा निर्दयता है | उनका यह भी मानना था कि राजकीय दासता से सामाजिक दासता अति दयनीय , भयावह एवं ईनसानियत उच्छेदिनी है | इन्हीं उपदेशों से भारत की राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय राजनीति ने सामाजिक न्याय, समावेशी विकास, सामाजिक परिवर्तन, विचारधारा, नीतियों और समतामूलक समाज व्यवस्था तथा आरक्षण को परिवर्धन एवं परिशोधन कर राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता के साथ, "सबका साथ सबका विकास", "बहुजन सुखाये बहुजन हिताये" एवं "अंत्योदय" जैसे राजनीतिक लक्ष्य चरितार्थ कर रहा है | उनकी सामाजिक चेतना ने राष्ट्रय एवं प्रादेशिक राजनीति में व्यापक परिवर्धन, परिमार्जन एवं परिशोधन किया है |

निष्कर्ष :- ज्योतिराव फूले तथा सावित्रीवाई फूले की सामाजिक चेतना महात्मा बुध्द, रविदास, कबीर जैसे अनेक संतो से प्राप्त हुई थी जिसका व्यवहारिक एवं कार्यकारी रूप छत्रपति शाहुजी महाराज, बाबा साहेब भीम राव अंबेडकर, बहुजन नायक मान्यवर कांशीराम जी एवं अन्य समावेशी और समाकलित व्यक्तित्व राजनीतिक प्रादुर्भाव के रूप में आधुनिक भारत के निर्माण हेतु प्राप्त हुए हैं |

शब्दार्थ :- निहितार्थ, परिमार्जन, परिशोधन, परिवर्धन, सत्यशोधक, लिंगवाद ,प्रादुर्भाव, समतामूलक, चरितार्थ, समाकलित संदर्भ सूची -:

1° अंबेडकर टुडे

राष्ट्रीय मासिक पत्रिका जून 2009 अंक □□

2 . अतिरिक्तांक राजनीति विज्ञान

प्रतियोगिता दर्पण – उपकार प्रकाशन , आगरा ।

3. आधुनिक विप्लव – आईएसएसएन 2278-3288

शोध पत्रिका ओक्टूबर , 2012 ।

4. फॉरवर्ड प्रेस द्विभाषी सितम्बर , 2014 अंक 09 ।

5. नीरा देशाई 1997 , जेंडर डाईमेन्शन इन फेमिली स्टडीज़: इन सोशल ट्रांसफ़ोरमेसन इन इंडिया, खण्ड 2 रावत पोब्लिकेशन , जयपुर ।

6. जिया लाला आर्य, (2018), सावित्री बाई फूले ।

7. श्रीनिवास एम° एन° (1967) , आधुनिक भारत मैं सामाजिक परिवर्तन, राजकमल प्रकाशन प्रा° लि° नई दिल्ली |

8. सिंह योगेन्द्र, (2014), भारतीय परम्परा का आधुनिकीकरण, रावत पब्लिकेशन, जयपुर ।

9..देसाई ए° आर° (2009) ग्रामीण समाजशात्री ,
पोपुलर प्रकाशन, बॉम्बे |

10. तपन विसवाल, मानवाधिकार, जेंडर एवं पर्यावरण, वीणा प्रकाशन 2008 ।

11. योजना मासिक पत्रिका, दिसम्बर 2016 अंक

12. डॉ° सुभी घुसिया (2011), भारतीय समाज में महिलाएं नेशनल बुक औफ ट्रस्ट, इंडिया |

13. डॉ° सोहनलाल शीतल (2016), महात्मा ज्योतिराव फूले ।